पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

रचनाकार :-
......**सरिता सेठिया**......

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - **सरिता सेठिया**

आधुनिक सभ्यता के सामने विकराल चुनौतियाँ

आधुनिक सभ्यता के सामने विकराल चुनौतियाँ

------ प्रस्तावना ------

आज का मानव इतिहास के सबसे विकासशील दौर से गुजर रहा है। हमने अंतरिक्ष, समुद्र की गहराइयों को, कम्प्यूटर व AI जैसी तकनीकों से दुनिया को अपनी उंगलियों पर समेट लिया है।

लेकिन इस चमक-दमक के पीछे एक कड़वा सच भी छिपा है। आज की दुनिया जितनी आधुनिक हुई है, उसकी समस्याएँ उतनी ही जटिल और विपरीत हो गई हैं। आज के समय में इंसानों के सामने कोई एक नहीं बल्कि कई बड़ी चुनौतियाँ हैं, तो कोई एक उत्तर संभव नहीं होगा। जहाँ एक तरफ हमारी धरती (पर्यावरण) बीमार हो रही है, वहीं दूसरी तरफ इंसान का समाज और उसका अपना मन भी टूट रहा है।

आज हम इस लेख में उन सबसे बड़ी और विकराल समस्याओं का गहराई से विश्लेषण करेंगे, जो पूरी मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए खतरा बन चुकी हैं, जो इस तरह हैं:

1. पर्यावरण और प्रकृति का संकट
2. हवा का संकट और जलवायु परिवर्तन
3. मानसिक तनाव और अकेलापन
4. आधुनिक जीवन शैली और अंधाधुंध विकास
5. खाद्य असुरक्षा और भुखमरी
6. स्वास्थ्य संकट और नई महामारियां
7. सामाजिक और आर्थिक प्रभाव : अशांति का नया कारण
8. पर्यावरण-अनुकूल कृषि
9. गरीबी और आर्थिक असमानता

1. पर्यावरण और प्रकृति का संकट

यह समस्या पूरी धरती एवं मानवजाति के लिए विकराल समस्या है। मानव के अस्तित्व के लिए एक बड़ा खतरा है।
प्रदूषण के कारण धरती का तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है, कहीं भयंकर सूखा तो कहीं अचानक भारी बाढ़ आ रही है। मानसून का रुख बदल रहा है, पेड़ कट रहे हैं, कंक्रीट बढ़ रहे हैं, इसलिए गर्मी का तापमान बढ़ता जा रहा है, और ये हर साल बढ़ता ही जा रहा है जो मानव जाति के लिए संकट है।
हमने प्रकृति से लेना तो सीख लिया पर देना नहीं सीखा, इसलिए भीषण प्रदूषण, गर्मी का सामना करना एक विकट समस्या है।

2. हवा का संकट और जलवायु परिवर्तन

प्रदूषण के कारण गाड़ियों का धुआं, फैक्ट्री, कंस्ट्रक्शन की धूल आदि से स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है। सांस की, आँखों की आदि आम बीमारियां ही बढ़ती जा रही हैं।
हम रोज कचरा पैदा करते हैं पर खत्म नहीं करते हैं। प्लास्टिक 500 साल तक जमीन में रहता है और फिर हमारे खाने-पीने में आ जाता है। पर इस सोच को कि "प्रकृति हमारी है", जबकि सच ये है कि "हम प्रकृति के हैं।" हमें प्रकृति को परिवार की तरह रखना चाहिए।
हमें इसका हल, जो कोई बहुत बड़ा नहीं है—बहुत छोटा है, अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी में उतारना चाहिए:
(i) पानी बचाना और ज्यादा पेड़ लगाना। एक पेड़ साल में 20,000 लीटर पानी जमीन में उतार देता है।
(ii) बगीचा या घर की खुली जगह में देशी पेड़ जैसे—नीम, पीपल, खेजड़ी लगाना चाहिए।
(iii) ज्यादा से ज्यादा कचरा खाद के रूप में काम में लेना चाहिए।
प्रकृति हमसे बदला नहीं लेती, वो बस संतुलन वापस लाती है। अगर हम अभी संतुलन बना लेंगे तो संकट टलेगा, नहीं तो प्रकृति खुद अपना संतुलन बना लेगी और फिर उसमें हमारी जगह मुश्किल हो जाएगी।

3. **मानसिक तनाव और अकेलापन**

आज हर आदमी के हाथों में पूरी दुनिया की जानकारी है, पर उसे परखने का ज्ञान, विवेक कम होता जा रहा है। वह तकनीक रूप से इतना जुड़ रहा है, दिल से उतना ही अकेला होता जा रहा है। दिखावे की दुनिया के आगे-पीछे भाग रहे हैं।

सोशल मीडिया के कारण लोग अपनी तुलना दूसरों से करते हैं और दुखी रहते हैं। हर समय आगे बढ़ने की होड़ ने इंसान का सुकून छीन लिया है। भाग-दौड़ की जिन्दगी की वजह से अफवाह, नफरत और डर बहुत तेज फैलता जा रहा है।

हम सब पैसा, सफलता, लाइक्स के पीछे बहुत तेजी से भाग रहे हैं, पर भागना कहाँ पर है ये किसी को साफ नहीं पता! इसी से थकान, अकेलापन और खालीपन बढ़ रहा है चाहे गांव हो या शहर। लोग इतनी भीड़ में रहकर भी अपने आप को अकेला महसूस कर रहे हैं, जिससे अवसाद बढ़ रहा है।

इन सब असंतुलन से बाकी सब समस्याएं निकलती हैं जैसे:

बेरोजगारी

युद्ध

डिप्रेशन

भ्रामक जानकारियां

4. **आधुनिक जीवन शैली और अंधाधुंध विकास**

आधुनिक तकनीक जहाँ जीवन आसान बना रही है, वहीं यह एक बड़ी समस्या भी बनती जा रही है। AI और Automation के कारण आने वाले समय में कई लोगों की नौकरियां जाने का संकट गहराया है। इंटरनेट पर निकली खबरें, fake news, deepfake जैसी खबरें समाज में नफरत और भ्रम फैला रही हैं।

हमारी जीवन शैली बहुत बदल गयी है, शारीरिक मेहनत कम होने के कारण और डिब्बा-बंद खाना खाने से बीमारियां बहुत बढ़ रही हैं। हम गंभीर बीमारियों जैसे—मोटापा, मधुमेह, दिल की बीमारी, कैंसर जैसी तकलीफें कम उम्र के लोगों को भी अपना शिकार बना रही हैं।

5. **अशांति का नया कारण (सामाजिक और आर्थिक प्रभाव)**

विकास के बड़े-बड़े दावों के बावजूद आज की दुनिया आर्थिक रूप से अत्यंत विभाजित हो रही है और उसका प्रभाव सामाजिक और आर्थिक जीवन पर पड़ रहा है।

अमीर और गरीब के बीच यह बढ़ती खाई समाज में बड़े विद्रोह की पृष्ठभूमि तैयार कर रही है। दुनिया की कुल सम्पत्ति एक ओर सिमट गई है, दूसरी ओर अरबों लोग ऐसे हैं जिन्हें आज भी दो वक्त की रोटी, बुनियादी शिक्षा और बुनियादी स्वास्थ्य सुविधा नसीब नहीं है।

इन समस्याओं के बढ़ने से लोगों में आक्रोश की भावना पैदा हो रही है। यही आक्रोश आगे चलकर चोरी, डकैती, आतंकवाद और विभिन्न सामाजिक अपराधों के रूप में फूट रहा है। यह समस्या सिर्फ भारत की ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया की है।

आज के समय में समझदार वही है जो पढ़ाई के साथ-साथ स्किल भी पकड़ लें। चाहे वो बोलना हो, लिखना हो, बेचना हो या ठीक करना हो। बिना स्किल के डिग्री एक कागज है। हमें अपने मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना होगा। योग, ध्यान और व्यायाम और परिवार के साथ समय बिताने पर महत्व देना चाहिए।

निष्कर्ष

आज के युग की सबसे बड़ी समस्या कोई बाहरी दुश्मन नहीं है, बल्कि इंसान का अपना लालच और असंतुलन है। हमने प्रकृति का शोषण किया, मशीनों को भगवान बना लिया और अपनों को भूल गए।

यदि हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों को एक सुरक्षित और सुन्दर दुनिया देनी है तो हमें आज ही अपने में बदलाव लाना होगा। प्रकृति का सम्मान करना होगा, तकनीक का सीमित व सही उपयोग करना होगा और आपसी प्रेम व सद्भावना से रहना ही इस युग की समस्याओं का एकमात्र व अन्तिम समाधान है।

जब तक मानव अपने आप से नहीं जुड़ेगा, इन समस्याओं का समाधान मुश्किल है। बाहरी अंतरिक्ष को खोजने के साथ-साथ अपने भीतर के इंसान को भी खोजना होगा। यही विकराल समस्या का एकमात्र शाश्वत और अन्तिम समाधान है।

- सरिता सेठिया

लेखक परिचय

नाम – सरिता सेठिया

ग्राम - लूणकरणसर,बीकानेर

राजस्थान

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ........**सरिता सेठिया**........जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।
उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...